International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 **Impact Factor – 8.141**
Peer Reviewed **Bi-Monthly**
Vol. 6 No. 18 **March - April - 2025**

शास्त्रीय संगीत मे बंदिश की उपयोगिता एवं शिक्षण में इसका अनुप्रयोग

प्रा. डॉ. प्रशांत झि. बागडे
सहयोगी प्राध्यापक
बाबाजी दाते कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय यवतमाल.
Corresponding Author – प्रा. डॉ. प्रशांत झि. बागडे

DOI - 10.5281/zenodo.15250581

बंदिश का ललित कला से संबंध होने के कारण सृजनशीलता इसका मुख्य आधार है। जो हर पल इसमे नवीनता बनाये रखने की कसोटी होती है। यदि ऐसा नही होता तो संगीत में विविध कला शैलीया हि न पनप पाती, न नये राग का निर्माण होता, और न हीं नित्य नई नई रचनाए प्रकाश मे आती। शास्त्रीय रागसंगीत कब का समाप्त हो चुका होता। भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि एवं ऐतिहासिक धरोहर है- राग पद्धति। रागो का विस्तार असीम सागर की भांति अथाह एवं अपरंपार है। भारतीय संगीत के महान विभूतियों, नायको एवं वाग्येयकारोने सौंदर्य को उद्घाटीत करनेवाली उत्कृष्ट कलापूर्ण बंदीश रचकर मात्र रागों की सच्ची आकृति को सजीव व जीवंत ही नहीं किया अपितु इन बंदिशें को राग विस्तार के माध्यम से संवर्धित व परिमार्जित कर शास्त्रीय संगीत जगत को अप्रतिम योगदान दिया है। हम अपनी राग जैसी अमूल्य धरोहर को बंदिश के माध्यम से ही आज तक संजोये रख पाए हैं, या यू कहना की बंदिशें में राग गूंथा हुआ होता है, अतिशयोक्ति न होगी। शास्त्रीय संगीत क्योंकि यह एक क्रियात्मक कल है इसके लिए इसके पठन-पाठन या सीखने-सिखाने का आधार गुरु-शिष्य या शिक्षक-छात्र से जुड़ा है, अर्थात यह एक गुरु मुख से ही सीख पाना संभव है। अतः शास्त्रीय संगीत के पठन-पाठन या सीखने-सिखाने में बंदीशो की महत्वपूर्ण भूमिका है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। हम जानते हैं कि राज अमूर्त होता है। इसे मूर्तवत रूप प्रदान करने का श्रेय बंदिश को ही जाता है। राग बंदिश का कलेवर पाकर सजीवता का रूप धारण करता है। पढ़ने या सुनने में साधारण सी प्रतीत होने वाली यह पंक्ति अमल में लाने हेतु एक कुशल गुरु का सानिध्य प्राप्त करने पर ही साकार एवं जागृत रूप ले पाती है।

यदि हम प्राचीन काल पर नजर डाले तो पाते हैं कि यही एक कारण था कि उस्ताद अपने सुयोग्य शिष्य व पुत्रों को एक ही राग के घरानेदार कई बंदीश अभ्यास कराकर सीखते थे। अतः यह बंदिश की ही महिमा है जिसने अपने आप में रागों के सही दर्शन व स्वरूप को संजोए हुए पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत की परंपरा को कायम रखने में अक्षुण योगदान दिया है। यदि ऐसा ना होता तो ख्याल शैली के सदारंग के बाद अदारंग और उनसे लेकर वर्तमान पीढी तक के विभिन्न रचनाकार ना हुए होते, जिन्होंने सैकड़ो बंदीशो का निर्माण कर संगीत जगत को एक अमूल्य धरोहर दी है।

बंदिश से अभिप्राय:

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में हम जो कुछ भी प्रस्तुत करते हैं वह राग की परिकल्पना के अंतर्गत निहित रहता है और इस राग़ की परिकल्पना को जो संजीव वह व्यवस्थित रूप प्रदान करती है, गायन शैली में बंदिश, रचना या चीज एवं वादन शैली में गत के नाम से जानी जाती है। बंदिश शब्द की उत्पत्ति मूलत फारसी

भाषा से हुई है जिसका अर्थ है - बंधन। एक ऐसा बंधन जो राग की सीमा में रहकर अर्थात राग के नियमों का पालन करते हुए हर पल सृजनशीलता उत्कृष्टता एवं नवीनता की और आमुख रहते हुए प्रेरित करता है। दुसरे शब्द मे बंदिश का अभिप्राय ऐसे सांगितिक रचना से है जिसके रागानुकुल स्वर संदर्भ को उपयुक्त शब्दावली एवं ताल आवृत्तीयो के अनुसार कलात्मक ढंग से बांधा गया है। इसे हम यु भी कह सकते है की जो स्वर - लय - ताल - बोल के समायोजन से समायोजित एक विशेष रूप को प्राप्त करे और राग के एक विशेष मनमोहक स्वरूप का निर्माण करे बंदिश कहलाती है।

बंदिश के माध्यम से हम एक ही राग की नई - नई शक्ले अर्थात रूप दिखाने मे सक्षम हो पाते है जिससे राग मे व्याप्त राग के सौंदर्य की नई - नई अभीव्यक्तियों को दर्शाया जाता है। अतः इस अर्थ मे राग रूप की अभिव्यक्ती उसके विविध रंगो की सच्ची तस्वीर को खीच पाना ही बंदिश का एक मात्र लक्ष हो जाता है। किसी भी उत्कृष्ट एवं आदर्श बंदिश मे राग मे प्रयुक्त होने वाली स्वरावलियों का समुचित प्रयोग उसके ताल विण्यास और शब्दों का उपयुक्त चयन निहित रहता है। जिससे उस राग का समुचा स्वरूप सिमटकर सामने आ जाता है। बंदीशो के इसी महत्व के कारण गुनिजन इने राग का आईना अर्थात दर्पण मानकर अधिक से अधिक से बंधीशो को कंठस्थ करने की सलाह देते है या दुसरे शब्द मे यु कहे की यही वह इत्र है जिसे हर घराणे के गुनिजन संजोने की चेष्टा करते है और संगीत के इसी इत्र के बल पर अपने घराणे की पूरी खुशबू पुरे संसार मे फैलाते आ रहे है। इसीलिए एक उत्तम एवं आदर्श बंदिश गागर में सागर कथन को पुष्टी करती है।

बंदिश की उपयोगिता :

संगीत में बंदिश को हम दूध के समान इस प्रकार समझ सकते हैं जो हमें हर मनचाहे पदार्थ को देने में सक्षम है। जिस प्रकार से हम अपनी आवश्यकता अनुसार दूध से दही, मक्खन, पनीर, खोआ व घी इत्यादि विभिन्न प्रकार के पदार्थ अपनी इच्छानुसार प्राप्त कर सकते हैं ठीक उसी प्रकार राग संगीत में भी बंदिश के माध्यम से ख्याल में आलाप तान व ध्रुपद में उपज इत्यादि बंदीशो के चिंतन मनन द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। आज यदि हम संगीत शिक्षण के स्वरूप व इसके विकास को देख तो संगीत शिक्षण परंपरागत गुरु शिष्य परंपरा या घरानों से निकलकर शिक्षण संस्थानों में एक विषय के रूप में स्थापित हो चुका है। एक निश्चित पाठ्यक्रम के तहत पठन-पाठन हो रहा है। ऐसे में शिक्षक - शिक्षार्थी एवं शिक्षण तीनों ही अनेकानेक समस्याओं से जूझते हैं। उदाहरण स्वरूप

सा - एक ही समय में विभिन्न गुण धर्म की आवाजों एवं प्रतिभाओं वाले शिक्षणार्थियों का सामूहिक शिक्षण।

रे - समय से एक निश्चित अवधि एवं समय भाव

ग - पाठ्यक्रम को पूरा करने का दबाव।

म - अपने अपने घराने के मर्यादा व गायकी का अनुसरण।

ठीक इसी प्रकार की समस्याएं शिक्षार्थी की भी है जिसके कारण ना तो शिक्षक ही पूर्ण रूपेण शिक्षा देने में समर्थ हो पाता है और न हीं विद्यार्थी पूर्ण रूपेण आत्मसात करने में सक्षम हो पाता है। किसी भी घराने की गाय की या गायन शैली में जिन विशिष्टताओं का होना आवश्यक होता है उनका संस्थागत शिक्षण पद्धति में निर्वहन कर पाना संभव नहीं हो पाता जो इस प्रकार से है -

- स्वर लगाव
- राग विस्तार अंग
- बंदिश का अंग
- लय ताल अंग
- तान प्रस्तार अंग

बंदिश का अंग अर्थात व्यवहार या विस्तार एक ऐसा विशेष ढंग है जिसके अंतर्गत अन्य सभी अंगों का अर्थात स्वर लगाव, राग विस्तार अंग, लय ताल अंग, तान प्रस्तार अंग का विश्लेषण किया जा सकता है। अन्य चार अंगों को मात्र बंदीशो के प्रयोग रख-रखाव के

ढंग से सरल व सहज तरीके से समझा व समझाया जा सकता है। प्रत्येक घराने की गायकी में इन पांचो अंगों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है किंतु बंदिशो के माध्यम से शिक्षण प्रदान करते समय मात्र बंदिशें के माध्यम से ही न्यूनाधिक सभी अंगों का विस्तार समझा वह समझाया जा सकता है प्रथम ढंग में बंदिश को गौन मानकर राग के स्वरूप पर ध्यान केंद्रित कर राग रूप की साधना की जाती है तथा द्वितीय में बंदिश को माध्यम मानकर उसके स्वरूप पर ध्यान केंद्रित कर उसके सहारे राग रूप का निर्माण किया जाता है। दोनों ही ढंग से जीस रस की सृष्टि, सौंदर्यअनुभूति एवं आनंद परिलक्षित होता है यही कला है और इसी कला को जीवित रखने के लिए प्रत्येक चेष्टा की जाती है कौन सा ढंग कितना उचित है यह प्रश्न मात्र विवादों को तो जन्म दे सकता है किंतु निष्कर्ष नहीं।

राग की बढ़त करने की दृष्टि से खयाल गायकी में बंदिश की और अधिक झुकाव रहता है क्योंकि बंदिश में राग का विशेष रूप बंधा रहता है और इस स्वरूप को बंधन से मुक्त कर पाने का नाम ही राग का विस्तार है जिसे गुरुजनों की भाषा में बंदिश का खोलना कहा जाता है। बंदिश को किस प्रकार से व्यवहार में लाया जाए कि वह रात के सभी अंगों व अवयवों को हमारे समक्ष स्पष्ट कर दें इसके लिए बंदिश में भारी रागरूप की और ध्यान केंद्रित करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना परम आवश्यक है -

सा - सबसे पहले बंदिश यथा स्थिति की अवस्था में हो अर्थात जिस प्रकार का शुद्ध रूप हमने गुरुमुख से सीखा है वह उसी रूप में हो। यदि इस वाक्य को विशेष रूप से ध्यान में नहीं रखा गया तो बाकी सभी बातें व्यर्थ हैं। क्योंकि राग क्रिया अपने आप में इतनी सूक्ष्म क्रिया है कि अनायास या किंचित मात्र राग की बढ़त करने की दृष्टि से ख्याल गायकी में बंदिश की और अधिक झुकाव रहता है, क्योंकि बंदिश में राग का विशेष रूप बंधा रहता है। और इस स्वरूप को बंधन से मुक्त कर पाने का नाम ही राग का विस्तार है जिसे गुरुजनों की भाषा में "बंदिश का खोलना" कहा जाता है।

रे- सीखी हुई बंदिश को भली प्रकार से आत्मसात किया जाए जिस किसी उसमें कहीं भी कोई शंका न रहे जाए। अब इस प्रकार से सीखी गई बंदिश के रूप स्वरूप को आकार में गाकर एवं उसकी गति को धीरे-धीरे धीमा करके इस अवस्था में लाया जाए कि उसमें लगने वाले प्रत्यक्ष स्वर कान अर्थात प्रतिक्रिया को भली प्रकार से समझ सके। क्योंकि यह क्रिया अपने आप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्रिया है जिसके आधार पर हमें राज विस्तार के विभिन्न अंगों के मर्म की जानकारी प्राप्त होती है, राग में लगने वाली महत्वपूर्ण स्वरावलीया न्यास, पकड़ इत्यादि का बोध होता है।

ग - इसके बाद बंदिश में व्यावहारिक राग रूप का अवलोकन किया जाना श्रेयस्कर है। सर्वप्रथम राग के पूर्वांग में बढ़ाने के लिए उसे बंदिश में कौन-कौन से रास्ते प्रयोग किए गए हैं वह इसका किस प्रकार का चलन रखा गया है। जैसे कौन-कौन से स्वर लग रहे हैं कौन-कौन से स्वर वर्जित किए गए हैं कि स्वर पर किस स्वर का कांड लिया गया है इत्यादि। यही सब क्रियाएं उत्तर रंग में बनने पर भी ध्यान में रखी जाती है। इसके अतिरिक्त एक और विशेष क्रिया अपेक्षित रहती है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है वह है की बंदिश के पूर्वांग व उत्तरांग को जोड़ने की बीच की कड़ी किस प्रकार से व्यवहारित की गई है।

म - बंदिश में अगली ध्यान देने योग्य बात यह है की बंदिश में किन-किन सवारों पर न्यास किया गया है और किस स्वर का प्रयोग किस परिमाण में अर्थात अनुपात में लिया गया है महत्वपूर्ण है।

अतः उपरोक्त बातों का ध्यान में रखा जाए तो बंदिश के आधार पर संपूर्ण गायकी की व्याख्या बंदिश के माध्यम से की जा सकती है। जैसे स्वर लगाओ राज विस्तार अंग ले लाल अंग तन प्रस्ताव अंग का विश्लेषण किया जा सकता है जो की एक घराने की गायकी को स्पष्ट करने के महत्वपूर्ण अंग है। इस विषय पर विद्वानों में मत मतांतर हो सकते हैं क्योंकि गायकी

विशेष की शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध गुणिजन इस दृष्टिकोण से शिक्षक प्रदान करने के प्रति उदासीन हो सकते हैं। किंतु यह एक नितांत सत्य है कि सभी गानों में ही सभी अच्छे-अच्छे गायको गुनीजनों ने बंदिश के इन रूपों का लाभ उठाया है और भविष्य में भी लाभ उठाते रहेंगे। क्योंकि बंदीशे मात्र बंदीशे नहीं होती बल्कि उनके पीछे सदैव वही कलाकार की उच्च सृजनशीलता,,, गहन चिंतन मनन अध्ययन एवं अनुभव का प्रतिफल है जिसमें उन्होंने राग के संपूर्ण स्वरूप को समेटने का प्रयास किया होता है।

अत: शास्त्रीय राग संगीत के पठण-पाठण, सीखने-सिखाने मे बंदीशे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। क्योंकि यही वह आधार है जिस पर एक कलाकार शिक्षक विद्यार्थी हर वर्ग अपनी गायन वादन की नई रखता है और उसे विभिन्न प्रकार से सजाने संवारने व रुचि कर बनाने की चेष्टा करता है ताकि उसका गायन वादन शिक्षण कार्यक्रम हर पहलू से संपूर्ण हो सके। निरंतर चिंतन मनन करने पर यह साधारण सी जान पढ़ने वाली बंदिश अपने आप में एक पारस पत्थर के समान प्रतीत होने लगती है जिसका स्पर्श पाते ही उसे रात का स्वरूप सोने के समान निखर जाता है अतः गुनीजनों द्वारा कही गई बात की अगर किसी राग की बंदिश या बंदीशे आपने सीख ली तो समझो वह राग आपकी मुट्ठी में हो गया अक्षरश: सत्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. संगीत की संस्थागत शिक्षक प्रणाली - अमरेश चंद्र चौबे
२. संगीत बोध - शरद चंद्र परांजपे
३. संगीत शास्त्र दर्पण - शांति गोवर्धन
४. सरस संगीत - डॉ. प्रदीप कुमार दीक्षित
५. ख्याल गायन शैली- विकसित आयाम- डॉ. सत्यवती शर्मा
६. सरस राग रंग - हेमराज चंदेल